अनुक्रम

संबोधन

मैं जो हूँ वह यहाँ अपने कर्मों से प्रमाणित करना चाहता हूँ	प्रो. सुरेन्द्र दुबे	11
झाँसी एक पवित्र भूमि है	प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी	14
झाँसी में साहित्यिक दौर	मैत्रेयी पुष्पा	18

स्वागत वक्तव्य

विश्वविद्यालय के इतिहास में स्वर्णिम दिन	प्रो. एम.एल. मौर्य	21

बीज-वक्तव्य

बुन्देलखण्ड का साहित्येतिहास : समस्या और समाधान	डॉ. रामशंकर द्विवेदी	22

बहस-चर्चा

राष्ट्रीयता और मानवतावादी कवि मैथिलीशरण गुप्त	प्रो. सदानन्द प्रसाद गुप्त	31
मैथिलीशरण गुप्त के राम : नये सन्दर्भ	प्रो. चित्तरंजन मिश्र	41
बुन्देलखण्ड अंचल के साहित्यिक सपूत	डॉ. विजय बहादुर सिंह	47
केदारनाथ अग्रवाल : धरती मुझको छन्द सिखाए	डॉ. दिनेश कुशवाह	57
बुन्देलखण्ड की काव्य परम्परा	रवीन्द्र शुक्ल	69
लोक और शास्त्र	प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल	77
बुन्देली भाषा-साहित्य : उद्‌भव और विकास	डॉ. गंगाप्रसाद बरसैंया	87
बुन्देलखण्ड की लोक गाथाएँ	प्रो. पवन अग्रवाल	95
बुन्देली लोक साहित्य की परम्परा	डॉ. बहादुर सिंह परमार	99
लोक साहित्य की परम्परा	डॉ. हेमा देवरानी	111
नाटक : परम्परा का बीजारोपण और भविष्य	डॉ. लक्ष्मी पांडेय	119
बुन्देलखण्ड की पत्रकारिता का महत्व	प्रो. रमेशचन्द्र त्रिपाठी	128

एक विलक्षण विधा का साँचे में ढल जाना — के.पी. सिंह — 135
बुंदेलखण्ड की माटी में ही दबे थे मेरी कहानियों के बीज — डॉ. विवेक मिश्र — 139

प्रतिभाग

तपस्या के प्रसून : यज्ञदत्त त्रिपाठी — डॉ. लखनलाल पाल — 147
मैथिली शरण गुप्त की राष्ट्रीय चेतना — डॉ. प्रत्यूष दुबे — 152
हिन्दी साहित्य और बुन्देलखण्ड — डॉ. मुहम्मद नईम — 159
वृन्दावनलाल वर्मा के साहित्य में सौन्दर्य-बोध — डॉ. कुमारेन्द्र सिंह सेंगर — 161
बुंदेली फाग और जन कवि ईसुरी — डॉ. बलजीत कुमार श्रीवास्तव — 166
बुन्देली साहित्य एवं परम्परा — डॉ. शक्ति प्रसाद द्विवेदी — 172
शिवानंद मिश्र 'बुन्देला' की काव्य साधना — डॉ. अरुण प्रताप यादव — 176
बुन्देली लोक गीतों में भारत का स्वाधीनता संग्राम — डॉ. अजय कुमार — 181
लोकगीतों की परम्परा और विकास — मनमोहन मनु — 185
बुन्देलखण्ड में लोक परम्परा — डॉ. सुनीता गुप्ता — 187
बुन्देली काव्य परम्परा में ईसुरी का योगदान — रुबीना बानो — 190
बुन्देली काव्य परम्परा में जगनिक का योगदान — शबाना बानो — 193
बुन्देलखण्ड के प्रमुख स्थानों से प्रकाशित पत्र-पत्रिकाएँ — कौशल त्रिपाठी — 198
साहित्य की प्रेरक : चंदेल वंश की वास्तुकला — सुनील कुमार साहू — 202
बुन्देली लोक कला जिसने साहित्य को प्रभावित किया — जयराम कुटार — 205

'बुन्देलखण्ड
साहित्यिक
किया है जह
भी चिह्नित व
को आगे बढ़
विरासत औ
विश्लेषण क
के नाम प
आवश्यकता
जाना ही उ
की बदलती
परिमार्जित
है। समाज
उसका वर्ण
कितना अह
रह रही है।
है। हमारे म
साहित्य में प्र
की परम्परा